भजन

आशिक तो हम हैं आपके,
पर आशिकी कर न सके
प्यार तेरा चाहते हैं हम,प्यार मगर कर न सके

1- कितनी सुनाई हमें धाम की चरचा,
नाता बताया जो भूला हुआ था
हम कौन हैं और कहाँ से हैं आए,
तुम न बताते तो हमें क्या पता था
इस खेल में सच झूठ का,हम बेवरा कर न सके
2- चितवन देकर परमधाम की,
सुरता को इस खेल से निकाला
बिन आपके कोई और नहीं जो,
अन्दर बाहेर कर दे उजाला
इतनी मेहर हुई आपकी,पर हम सिला दे न सके
3- नासूत का तन ले के पिया ने,
रूहों के लिए कितने कष्ट उठाए
इक इक को सुध देने की खातिर,
वाणी खुलासा करके बताए
विरहा में रोते हैं हम,विरह में मर न सके